Appendix

"प रि शि ष्ट"

१. गुजराती सन्तों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली ।

२. गुजरात के हिन्दी-सेवी सन्तों की नामावली ।

३. गुजरात के सन्त-कवियों द्वारा लिखित हिन्दी-ग्रन्थ ।

४. संदर्भ ग्रन्थ-सूची ।

परिशिष्ट — १

गुजराती सन्तों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली :

अणलिंगी :

गुजरात की सन्त वाणी में `अणलिंगी` शब्द बार बार मिलता है । यह मूल `लिंग` शब्द में `अण` पूर्वग के योग से बना है । `लिंग` अर्थात् हेतु और `लिंगी`, अर्थात् हेतु द्वारा साध्य का अनुमान होता है । अत: लिंग द्वारा जिसका अनुमान न हो सके ऐसा तर्कातीत तत्त्व ब्रह्म `अणलिंगी` कहलाता है । तंत्रालोक में भावना अव्यय पद को `लिंग` कहा गया है । शैवागम में लिंग साधना की प्रतिष्ठा है । अखा ने `अणलिंगी` को अवाच्य, सर्वातीत एवं निरधार बताया है ।[१] रविसाहब ने इसे अभेद एवं अछेद कहा है ।[२] बृहद काव्य दोहनकार ने `अणलिंगी` का अर्थ `विदेही` अथवा `मुक्त` लगाया है ।[३] वस्तुत: `अणलिंगी` वह है जो `अंग` एवं `लिंग` दोनों से परे है ।[४]

अनहद :

सीम-असीम से परे जो निस्सीम है,[५] उसीको सन्तों ने हद-बेहद से परे `अनहद` की संज्ञा से अभिहित किया है ।[६] योग साधना में `अनहद` के

---

१. `एही अवाच्य अणलिंगी अनुभव, जाग्रत निद्रा टाली
साखी सोनारा पंच पंचन को, सर्वातीत निरधारी।`—अ.वा.म.प., पृ.२५३ ।

२. `रविदास अभेद अछेद है, अणलिंगी पद नीरवाण ।` रविसाहबकृत—भाणगीता—१ ।

३. देखिए बृ.का.दो.भाग १, पृ.८६७ ।

४. `अंग मेलावा अंग लग, लिंग मेलावा दोय,
अंग लिंग ते न्यारा अखा, तहाँ तो दोउ न होय ।` अ.सा.प्रत्यक्ष अंग-६ ।

५. `हद चले सो मनवा, बेहद चले सो साध ।
हद बेहद दोऊ तजे, ताकर मता अगाध ॥`
—कबीर, पृ.३५३:२३० ।

६. `ए चिद् ज्युं का त्युं है सदाई,
जहाँ आपापर न मिले अहर्निश, बेहद हद न कहाई ।`
—अखा, अ.म.प., पृ.२७८ ।

साथ प्राय: 'अनाहतचक्र' तथा 'अनाहद नाद' का भी उल्लेख मिलता है। सन्तों ने सामान्यत: इन दोनों शब्दों के लिए भी 'अनहद' का ही प्रयोग किया है।[१] कुण्डलिनी जब उद्बुद्ध होकर ऊपर की ओर उठती है तो उससे स्फोट होता है, जिसे नाद कहते हैं। नाद से प्रकाश होता है और प्रकाश ही व्यक्तरूप महाबिन्दु है। ... यह जो नाद और बिन्दु है वह असल में अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनाहत नाद या अनहद नाद का व्यष्टि में व्यक्त रूप है।[२] वस्तुत: ब्रह्मरंध्र में निरन्तर उठने वाले स्फोटक संगीत को अनहद नाद कहा जाता है।[३] इसमें योगी मस्त होकर ईश्वर की ओर ध्यान केन्द्रित करता है।[४] डॉ.रामकुमार वर्मा ने इसका शुद्ध रूप 'अनाहद' बताया है।[५]

'ऐन' और 'गैन':

डॉ.हरिवल्लभ भायाणी ने इस प्रकार के शब्दों की व्युत्पत्ति युग्म रूपों में मानते हुए इन्हें द्विरुक्त शब्दों में स्थान दिया है।[६] 'अटकन-मटकन दही चटाका' की भाँति गुजरात के बच्चों के खेल में प्राय: ये शब्द सहज ही सुने जाते हैं : "एन गेन, दीवा धेन, डाहीनो घोड़ो।" यहाँ 'ऐन गैन' का प्रयोग 'इर्द गिर्द' के अर्थ में हुआ प्रतीत होता है। उर्दू वर्णमाला में भी हमें इस प्रकार के दो वर्ण मिलते हैं, जिनमें अन्तर केवल एक नुक्ते का है। नुक्ता हटा देने पर दोनों में वस्तुत: कोई अन्तर दिखायी नहीं देता। गुजरात के संतों

---

१. 'अनहद बाजे तूर, झलमले अखंड नूर'।—गवरीबाई।
२. कबीर—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.४६।
३. 'कबीर का रहस्यवाद'—डॉ.रामकुमार वर्मा। पृ.१६०।
४. 'झलमल ज्योति सो स्थल झमकारा,
   अनहद नाद बाजत रतनारा।' —धीरा, प्रा.का.मा.ग्रन्थ २४,पृ.२०६:११।
५. 'कबीर का रहस्यवाद'—डॉ.रामकुमार वर्मा। पृ.१६०।
६. देखिए—'वाग्व्यापार'—डॉ.हरिवल्लभ भायाणी। पृ.२४६।

ने इन ... दोनों वर्णों को अपनी पारिभाषिक शब्दावली में विशिष्ट स्थान देते हुए इन्हें इस प्रकार समझाया है कि 'ऐन-गैन' जिस प्रकार समान अक्षर हैं, किन्तु एक नुक्ता मात्र दोनों में भेद उत्पन्न कर देता है, ठीक उसी प्रकार देह में आत्मा का निवास है किन्तु अहं का आवरण उसे ढक लेता है । अत: जब तक अहं का विनाश नहीं होगा, आत्म-प्रतीति असंभव है ।[1] अखाने अपने ढंग पर इन शब्दों की व्याख्या की है । उन्होंने 'आत्मा' को 'ऐन' तथा 'अहं' को 'गैन' कहा है ।[2] 'ऐन' के सूझने पर त्रिगुणाभास उसी प्रकार विलीन हो जाता है जिस प्रकार आकाश में से बादल और जागने पर स्वप्न वृत्तियाँ विलीन हो जाती हैं ।[3] इसे जान लेने पर मन स्वत: 'ऐन' हो जाता है :—

> 'जान लिया, येहि जान मान मन ऐन है,
> सद्गुरु प्रीछ्या नहीं, तब लगि गहैन है ।'[4]

अखा ने 'ऐन' का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में किया है । 'अखेवाणी' में यह शब्द 'आज्ञा' और 'प्रतिज्ञा' के अर्थों में भी ध्वनित है । उदाहरणार्थ :—

> 'रामभक्त साचा अखा पालत गुरु के वैन ।
> धरनी बोल परे नहीं गुरु की मानत ऐन ।'[5]

<u>अजपा जाप :</u>

यह प्राय: उस प्रकार की उपासना पद्धति अथवा स्थिति है जिसमें सभी प्रकार के बाह्य साधनों के प्रयोग छोड़ दिये जाते हैं और एक अन्त: क्रिया मात्र चलती रहती है ।[6] गोरखनाथ के अनुसार मन को एकाग्र करना तथा श्वास को नियंत्रित करना अजपाजाप की अपूर्व विधि है ।[7] इसमें मन को शून्य

---

१. देखिए 'अनवर काव्य', पृ.१६४ ।
२. ''संतो' 'गैन गया, ऐन सूझ्या, मै सो तूं, नहीं दूजा ।'
३. 'ज्युं गैबी बादर होय अंबर में, उपजी वृत्ति विलावे,
त्रिगुणाभास इसी विधि बूझे, सो नर जाय न आवे ।'—'अखाकृत भजन' २१।
४. 'अखाकृत भजन'—३२ ।
५. 'अक्षयरस' पृ. २५८ :
६. देखिए 'हिं.का.नि.स.', पृ.४१५ ।
७. वही पृ.२८६, ८७ ।

में निहित करके `ओहं` के स्थान पर `सोहं` का ध्यान किया जाता है । इसी `सोहं` से शब्द-ज्योति प्रकट होती है और अन्तर एवं बाहर प्रकाश हो जाता है ।[1] इस प्रकार `जाप` साधक की बाह्यक्रिया है, `अजपाजाप` आभ्यन्तरिक और `अनाहत` सुमिरन की वह स्थिति है जिसके द्वारा साधक अपनी आत्मा के गूढतम अंश में प्रवेश करता है और सभी स्थितियों को पार कर कारणातीत हो जाता है ।[2] दादू के अनुसार यह एक ऐसा स्मरण है जैसाकि एक हिन्दू रमणी अपने पति का नाम नहीं लेती फिरभी उसके लिए तन-मन अर्पण करने को तैयार रहती है ।[3] अखा ने इसे जप, तप, तीर्थ, पूजा, ध्यान, धारणा, पाप पुण्य तथा जन्म मरण की आशंकाओं से परे बताया है ।[4] गुजरात की सन्त साधना में नाम स्मरण का महत्त्व सर्वाधिक है । कबीर ने जिस प्रकार ध्यान का केन्द्रबिन्दु `राम` को रखा है, गुजरात के सन्तों ने भी ठीक इसी प्रकार राम के नाम का दामन पकड़ा है । इन्होंने वस्तुत: नामसे स्नेह करके ही परमपद की प्राप्ति की है :—

`नेहडा नाम से लगाऊँ, नामसे लगाऊँ परमपद पाऊँ ।`

— गवरीबाई ।[5]

संक्षेप में कबीर की भाँति गुजरात के सन्तों ने भी इसे योग की जटिल साधना से मुक्ति प्राप्त करने के लिए सर्व सुलभ साधना-पद्धति के रूप में अभिहित किया है । उनका सहज-जाप भी यही है ।

---

१. कबीर : एक अध्ययन-डॉ.सरनामसिंह शर्मा । पृ.५७० ।
२. वही वही पृ.५७० ।
३. `सुन्दरि कबहुं कंथ का, मुखसों नाम न लेइ ।
अपने पिय के कारने दादू तनमन देइ ।।`
—दादू बानी : वे.प्रे.:, भाग १, पृ.२४१ ।
४. `जनम-मरण सब शंका भागी, जब मेरी सुरता मुझसों लागी ।
ना करूं पूजा न तीर्थ नहावुं, ना मै ध्यानी के ध्यान समारूं ।
ना मैं ज्ञानी के ज्ञान विचारूं, ना मैं चतुर के मूर्ख अजाना ।
ना मैं पंडित जान सुजाना ; ना मोहे पाप पुण्य ना धारूं ।
ना मैं जीतुं ना मैं हारूं । जनम-मरण ।`—अखाकृत भजन — १४ ।
५. `गवरी कीर्तनमाला` पृ.२५, पद ४६ ।

निरंजन :

यह शब्द अत्यन्त प्राचीनकाल से प्रयुक्त होता आ रहा है। मुण्डकोपनिषद[1]; और भागवत[2] में इसका प्रयोग क्रमश: ब्रह्मवेत्ता तथा पवित्र के अर्थ में हुआ है। हठयोग प्रदीपिका[3] में इस शब्द को सहज, उन्मनी आदि का पर्याय एवं माया रहित शुद्ध-बुद्ध मुक्त ब्रह्म का वाचक बताया है। सिद्धों ने इसका अर्थ शून्य के साहचर्य से लिया है जबकि नाथ-योगियों ने इस शब्द को यौगिक ब्रह्म के अर्थ में अभिहित किया है। कालान्तर में 'निरंजन' शब्द का घोर परिवर्तन अज्ञान तथा माया के प्रतिरूप में किया जाने लगा।[4] गुजराती सन्तों की बानियों में इस शब्द का प्रयोग यौगिक-ब्रह्म, शब्द-ब्रह्म, आत्मतत्त्व आदि अर्थों में मिलता है। उदाहरणार्थ :—

यौगिक-ब्रह्म के अर्थ में :—

'सुन्न सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव।'—दादू।[5]

शब्द-ब्रह्म के अर्थ में :—

'ॐ नमो आदि निरंजन राया,
जहाँ नहिं काल कर्म अरु माया।'—अखा।[6]

आत्म-तत्त्व के अर्थ में :—

'अलख निरंजन साईं हमारा।
जो सर्वदा सकल में व्यापक,
सबका साक्षी सबसे न्यारा।' मनोहरदास।

मीनमार्ग :

सन्तों ने इसे 'विहंगममार्ग' अथवा 'दर्दुरमार्ग' भी कहा है। अखा ने 'मीनमार्ग' अथवा 'मीनकला' को महादशा कहा है।[7] 'विहंगम' की प्रतीति

---

१. 'मुंडकोपनिषद्' ३।३।
२. 'श्रीमद्भागवत्' १।५।१२।
३. 'हि.का.नि.द.', पृ.७२०।
४. 'कबीर'—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। पृ.५४।
५. दादू बानी, भाग १, पृ.५२।
६. 'अखाकृत 'ब्रह्मलीला'—१।
७. 'मीनकला सो महादशा, जाने को एक भेव,
जिनकु डुबन का डर, अखा सो करे ढीमर की सेव।'
श्री. अ.सा. सहजशक्ति को अंग।

अखा ने एक जगह इस प्रकार कराई है । : —

> `जे पद दूर निकट नहिं कैसा,
> सो पद जनहि विचारा,
> सो नर विहंगम गये सुनिश्चल,
> वे पद अखा हमारा ।`
>
> — भजन : २६ ।

समरस :

इसे हरिरस, रामरसायन, महारस, गोविन्दरस, अक्षयरस तथा ब्रह्मानंद आदि विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है । वस्तुत: अखा का जो अक्षय रस है, वही धीरा का गोविन्दरस है और वस्ता का अन्तर रस भी वही है । इन सभी का प्रयोग `ब्रह्मानंद` अथवा `ब्रह्मखुमारी` के अर्थ में ही हुआ है । गुजरात के सन्तों द्वारा प्रयुक्त इस प्रकार के विशिष्ट शब्द निस्सन्देह उनके पारिभाषिक कोष में अभिवृद्धि करते हैं । अखा ने अपने एक पद में इस प्रकार के एकाधिक शब्दों की प्रतीति एकसाथ करायी है ।[१] `समरस` शब्द का प्रयोग नाथ योगियों ने भी किया है । उनके अनुसार योगी किसी को असम दृष्टि से नहीं देखता, न वह साकार है और न निराकार, वह भेद और अभेद नहीं जानता । वह विनिर्मुक्त है । केवल शिव है । संसार की जटिल व्यवस्था में अपने लिए समानता ढूंढ़ता है । वह अपने को सत्य असत्य न कह कर आकाश

---

१. `राम रसायन जन जिनहीं पियो है,
ताके नैन भये न भये और,
जबहीं प्यालो भानु कान दियो है,
राम रसायन जन जिनहीं पियो है ।`

०० ०० ००

२. `भिन्न भिन्न भाव रह्यो तोरि भीतर, सो सब महारस नीर दियो है ।
पीयो है पियूष पञ्यो वृदामां, महाअनुभव प्रकाश कियो है ।`

०० ०० ००

३. उतरत नाहीं ताके ब्रह्मखुमारी,
वाकुं कबहुं न काल ग्रह्यो है ।` अ.वा., पृ.२६७ ।

के समान ज्ञान का अमृत समरस कह कर अभिहित करता है ।[1] वेदों में ब्रह्म को `रसो वै स: ` कहा गया है । `सोमरस` के साथ भी `समरस` की संगति बिठायी जा सकती है ।[2] वस्तुत: सोमरस का जो नशा है वही समरस की खुमारी है और `रामरसायन` का पान भी वही है । यह `सहज` का वाचक भी है ।[3] अखा ने इसे `एकरस` तथा अभिन्न` के अर्थ में भी प्रयुक्त किया है ।[4] ऐसा समरस ज्ञान दुर्मति को दूर करने वाला होता है ।[5]

शून्य :

आचार्य द्विवेदीजी ने इस शब्द को भारतीय साहित्य साधना का अत्यधिक मनोरंजक शब्द कहा है ।[6] बौद्ध महायान सम्प्रदाय के दार्शनिकों की दो शाखाएँ हैं । एक मानती है कि संसार में सब कुछ शून्य है और दूसरी मानती है कि जगत के सभी पदार्थ बाहरी तौर पर असत् होने पर भी चित् के निकट सत् हैं । इनमें पहली शाखा को शून्यवाद कहते हैं ; और दूसरी को विज्ञानवाद । नागार्जुन ने शून्य की व्याख्या करते हुए उसे शून्य, अशून्य और शून्याशून्य से भी `परे कहा है ।[7] इस प्रकार यह अनिर्वचनीय तत्त्व है । नाथपंथी सबसे ऊपरी सहस्त्रार चक्र को `शून्य चक्र` कहते हैं तथा इस रूप में उन्होंने इसे `केवल` कहा है ।

---

१. `अद्वैत रूपमखिलंहि कथं वदामि, नित्यं अनित्यमखिलं हि कथं वदामि ।
सत्यमसत्यमखिलं च कथं वदामि , ज्ञानामृतं समरसं गगनोपमोहम् ।`कपिलगीता
: गोरखनाथ और उनका युग, पृ.१४१ से उधृत :

२. कबीर—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ.४८ ।

३. हि.नि.का.दा., पृ.७१८ ।

४. `पर में पंत, पंचमें पर है, है समरस, नहीं आना,
भिन्न पर्यो कौन, कहो कहां ते ? ज्यूं नभ में दीप समाना ।–अखाकृत भजन :६ ।

५. `समरस ज्ञान सहेज घर साधे, दुरमकु द्वारा ।–महात्यमराम की बानी ।

६. कबीर, पृ.७१ ।

७. `शून्यमिति न वक्तव्यं अशून्यमिति वा भवेत् ।
उभयं नोभयं नैव प्रज्ञात्यर्थं तु कथ्यते ।` — नागार्जुन ।

सहजयानी भी इसी कैवलावस्था को बार बार शून्यपद से अभिहित करते हैं। कबीर ने भी `सहज शून्य` का एकसाथ प्रयोग किया है, किन्तु वह योगियों की सहजावस्था से भिन्न है। उन्होंने तो `समस्त`का आस्वादन इसी सहजशून्य में किया था।[1] हठयोग के अन्तर्गत ब्रह्मरंध्र का छिद्र जो :०: बिन्दुरूप होता है, इसीसे कुंडलिनी का संयोग होता है। इसी स्थान पर ब्रह्म का निवास है। योगि जन इसी रंध्र का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। इस छिद्र के छ: दरवाजे हैं, जिन्हें कुण्डलिनी के अतिरिक्त कोई नहीं खोल सकता।[2] सन्तों में शून्य का प्रयोग प्राय: निम्न लिखित अर्थों में हुआ है—

:१: परमार्थ तत्त्व के रूप में :

`सहज सुनि सब ठौर है सब घट सबही माहिं`।

—दादूबानी, भा.१, पृ.५१।

:२: शब्द ब्रह्म के अर्थ में :

`सुण सनेही रामभज, तज माया अविद्या फौज को।-रविसाहब।

:३: समय और स्थान के अर्थ में।:

`शून्य शिखर पर घर है हमारा, अखंड धाम की लीला है न्यारो।

—लालदास।

:४: ब्रह्मरंध्र के अर्थ में। :

`सुन सरोवर मीन मन नीर निरंजन देव।`

दादूवानी, भाग २, पृ.५१।

---

१. `कबीर का रहस्यवाद`-डॉ.रामकुमार वर्मा, पृ.१६४।

२. कबीर,-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ.७२ से ७४।

परिशिष्ट—२

"गुजरात के हिन्दी-सेवी सन्तों की नामावली"

१. अखा
२. अर्जुन भगत
३. अनवर मियाँ
४. अनुभवानंद : नाथ भवान :
५. अबर मल्ल
६. अभरामदास
७. अमरदास
८. अमीचंद
९. अमीधर महाराज
१०. अलख बुलाखी
११. आत्मदास
१२. आत्मानंद स्वामी
१३. आनंद तयन
१४. ईश्वरदास
१५. ईश्वरराम
१६. ईसर बारोट
१७. उपेन्द्राचार्य
१८. ऊका भगत
१९. ऊँकारेश्वरी माता
२०. ओधवदास
२१. करक
२२. कल्याण
२३. कल्याणदास
२४. कमाल
२५. कहान
२६. कुबेरदास
२७. केवलपुरी
२८. केवल तेली
२९. कृष्णदास : कबीर पंथी :
३०. कृष्णदास : देवा साहब के शिष्य :
३१. खालस
३२. खीम साहब
३३. खुमानबाई
३४. खूब मुहम्मद चिश्ती
३५. खोजीराम भगत
३६. गणपतराम
३७. गरीबदास
३८. गवरीबाई
३९. गुलाबपुरी
४०. गोपालदास
४१. गोविन्द
४२. गौरीशंकर
४३. गंगाराम
४४. चक्रधर
४५. चातकदास
४६. छोटम
४७. छोटालाल
४८. जगजीवन

४६. जगजीवनदास
५०. जगन्नाथदास
५१. जानकीबाई
५२. **जीतामुनि नारायण**
५३. जीवा भगत
५४. जीवण
५५. जीवणदास
५६. जीवणदास :दासी जीवण :
५७. जेठीबाई
५८. जेठीराम
५९. डुंगरपुरी
६०. डोसा भगत
६१. तिलकदास
६२. तुड़ापुरी रूखड़िया : : लालापुरी :
६३. तुलजाराम भट्ट
६४. तेजसिंग
६५. त्रिविक्रमानंद
६६. त्रीकम साहब
६७. थोभण
६८. दयानंद सरस्वती
६९. दयानंद स्वामी
७०. दादू
७१. दास
७२. दास मलिक
७३. दीन दरवेश
७४. दीन साहब
७५. दुर्लभ
७६. देवकृष्ण
७७. देवात
७८. देवा साहब
७९. देवीदास
८०. देवी तुलजा
८१. देवीसिंह
८२. धीरा
८३. धोन
८४. नथुराम
८५. नथुलाल
८६. नरसिंह मेहता
८७. नरसिंह शर्मा
८८. नरहरि
८९. नरहरिदास
९०. नारायण
९१. निर्भय
९२. नारणदास
९३. निर्मलदास बाबा
९४. निरांत

९५. नुरन
९६. नृसिंहाचार्य
९७. नेहाल
९८. प्यारेलाल
९९. प्राणनाथ
१००. परमानंद स्वामी
१०१. प्रीतमदास
१०२. पीताम्बर
१०३. पीपा भगत
१०४. प्रभुदास
१०५. फकरुद्दीन
१०६. फख्र साहब
१०७. फरीद साहब
१०८. बापुसाहब गायकवाड़
१०९. बालकदास
११०. बालम चमार
१११. बिहारीदास : वैरोजी :
११२. बूटियो
११३. ब्रह्मगिरि
११४. भगवानजी महाराज
११५. भवानीशंकर
११६. भक्त धोला
११७. भाण साहब
११८. भाणजी मोहनजी
११९. मादुदास
१२०. भीम साहब
१२१. भोजा भगत
१२२. मनोहरदास : सच्चिदानंद :
१२३. मयूखदास
१२४. महात्मा गांधी
१२५. महात्यम राम
१२६. महमूद दरियायी
१२७. मंगलदास चतुर्भुज
१२८. मंछाराम
१२९. माणिकदास
१३०. माधवदास
१३१. मांडण
१३२. मीरांबाई
१३३. मुकुन्द गूगली
१३४. मुकुन्ददास
१३५. मुरादमीर
१३६. मूलजी भगत
१३७. मूलजी राजा
१३८. मेकनदादा
१३९. मोभाराम
१४०. मोरार साहब
१४१. मोहकमसिंह बारोट ।
१४२. मोहनदास
१४३. मोहम्मद अमीन
१४४. रघुवीर

१४५. रत्नो भगत
१४६. रणछोड़
१४७. रणछोड़ दीवान
१४८. रमजान अली
१४९. रमता राम
१५०. रवि साहब
१५१. राघो भगत
१५२. राधाबाई
१५३. रंग अवधूत
१५४. रंगीनदास
१५५. रंगीलदास
१५६. लक्ष्मणदास
१५७. लब्धाराम : लाधा भगत :
१५८. लालदास
१५९. लालदास
१६०. लालराम
१६१. वच्छराज
१६२. वस्ता विश्वम्भर
१६३. वहीद
१६४. वाणीदास
१६५. विश्राम
१६६. वली
१६७. शंकर महाराज
१६८. शाम
१६९. शाह अलीगाम धनी
१७०. शाह हाशिम
१७१. शिवानंद
१७२. शेख बहाउद्दीन बाजन
१७३. समर्थराम
१७४. समर्थदास
१७५. सरयूदास
१७६. स्वरूपदास
१७७. सागर
१७८. सुजस
१७९. सेवाराम
१८०. संतराम महाराज
१८१. संत शेख शकू
१८२. हज़रत सैयद मुहम्मद जौनपुरी
१८३. हरीदास
१८४. हरी सिंह
१८५. हरीराम
१८६. हीरादास
१८७. होथी
१८८. क्षेमसागर

परिशिष्ट - ३

"गुजरात के संत-कवियों द्वारा लिखित हिन्दी-ग्रन्थ"

१.	अखेगीता : हि.गु.:	अखा
२.	अर्जुन-वाणी : हि.गु.:	अर्जुन भगत
३.	अनवर-काव्य : हि.गु.:	अनवर मियाँ
४.	अवधूती आनंद : हि.गु.:	रंग अवधूत
५.	आत्मलक्ष चिंतामणि	रवि साहब
६.	आत्म विचार	माणिकदास
७.	आत्म बोध	माणिकदास
८.	आत्मविलास	आत्मदास
९.	एकलक्ष रमैनी	अखा
१०.	कबीर चरित	मुकुन्द गूगली
११.	कवित्त प्रबन्ध	माणिकदास
१२.	करुणा विनति	दास
१३.	काफर बोध	कल्याणदास
१४.	काफर बोध	जीतामुनि नारायण
१५.	कुलजुम शरीफ	प्राणनाथ
१६.	कृष्ण बाल विनोद	बिहारीदास
१७.	कृष्णसागर	देवा साहब
१८.	खूब तरंग	खूब मुहम्मद चिश्ती
१९.	गवरी कीर्तन-माला	गवरीबाई
२०.	गुण आगम	ईसर बारोट
२१.	गुण भागवत	ईसर बारोट
२२.	गरुड पुराण	ईसर बारोट
२३.	गुरुगीता	वस्ता विश्वम्भर
२४.	गुरु-बावनी	संतराम महाराज
२५.	गुरु-महिमा	मोरार साहब
२६.	गुरु-महात्म्य	रवि साहब

२७. गुरु शिष्य संवाद मुकुन्ददास
२८. गुरु स्तुति बिहारीदास
२९. गीता रहस्य मुकुन्ददास
३०. गोरख चरित मुकुन्द गूगली
३१. चक्रधर चौपदी चक्रधर
३२. चिन्तामणी सीम साहब
३३. छन्द भास्कर कल्याणदास
३४. छोटम वाणी : हि.गु. : छोटम
३५. छोटा हरिरस ईसर बारोट
३६. छोटी चिन्तामणि महात्मयराम
३७. जकड़ी पद अखा
३८. जगजीवन विलास जगजीवन
३९. झूलणा पद अखा
४०. तारतम्य सागर तुलजाराम भट्ट : करुणावती :
४१. देवियाण ईसर बारोट
४२. दिवाने सागर : भाग १,२ : सागर :जगन्नाथ त्रिपाठी:
४३. ध्रुवचरित समर्थराम
४४. नमलीला समर्थराम
४५. नभू वाणी नभूलाल
४६. नवरंग सागर मुकुन्ददास
४७. निंदा स्तुति ईसर बारोट
४८. निरांत काव्य : हि.गु. : निरांत
४९. पद संग्रह समर्थराम
५०. प्रस्ताविक कुंडलियाँ बिहारीदास
५१. पंचकोश प्रबन्ध रविसाहब
५२. बड़ी चिन्तामणि महात्मयराम
५३. ब्रह्मलीला अखा
५४. ब्रह्मलीला प्रीतमदास

५५.	बाल लीला	ईसर बारोट
५६.	बोध चिन्तामणि	रवि साहब
५७.	बोध सुधा	छोटम
५८.	भक्त महिमावली	महात्म्यराम
५९.	भक्त नामावली	प्रीतमदास
६०.	भाग गीता : हि.पु. :	रवि साहब
६१.	मिहिराज चरित	मुकुन्ददास
६२.	महात्म्य ज्ञान प्रकाश	महात्म्यराम
६३.	मंगल कीर्तन	मंगलदास चतुर्भुज
६४.	मंगल्ल	वस्ता विश्वम्भर
६५.	युसुफ जुलेखा	मोहम्मद अमीन
६६.	यदुनंदन	कृष्णदास
६७.	रघुवंशमणि	कृष्णदास
६८.	रविभाण प्रश्नोत्तरी	रवि साहब
६९.	रसगीता	दास
७०.	रस चन्द्र	कल्याणदास
७१.	रास कैलास	ईसर बारोट
७२.	रामगुंजार चिन्तामणि	रवि साहब
७३.	राम रसायण	माणिकदास
७४.	राम सागर	देवा साहब
७५.	रंगील सतसई	रंगीलदास
७६.	लीली प्रकाश	मुकुन्ददास
७७.	विष्णुपद	अनुभवानंद
७८.	वैराट	ईसर बारोट
७९.	श्री अखाजी नी साखियो : हि.गु.:	अखा
८०.	शब्द वाण सुधा सिन्धु	महात्म्यराम
८१.	शिव रहस्य	रणछोड़जी दीवान
८२.	षटचक्र लावणी	गणपतराम

८३.	षट् शास्त्र	मुकुन्ददास
८४.	सत्संग प्रवाह	माणिकदास
८५.	स्वाचार पत्रिका	कुबेरदास
८६.	सत्तार भजनामृत	सत्तारशाह चिश्ती
८७.	सप्तश्लोकी गीता	प्रीतमदास
८८.	साखी ग्रन्थ	वस्तो विश्वंभर
८९.	साखी ग्रन्थ	प्रीतमदास
९०.	सिद्धान्त बावनी	नाराणदास
९१.	सुन्दर सागर	मुकुन्ददास
९२.	सुकृत बोध	कुबेरदास
९३.	संतोष सुरतरु	माणिकदास
९४.	संत प्रिया	अखा
९५.	हरिरस	ईसर बारोट
९६.	हरिसागर	देवा साहब
९७.	हरिविलास : ज्ञान प्रकाश :	हरिराम
९८.	हंस	ईसर बारोट
९९.	हंस तालेव : ज्ञानगीता :	कुबेरदास
१००.	ज्ञानकटारी	हरीसिंह ठाकुर
१०१.	ज्ञानमास	दास
१०२.	ज्ञानमास	निर्मलदास बाबा
१०३.	ज्ञान प्रकाश	कृष्णदास ।

०० ०० ००

परिशिष्ट—४

" संदर्भ — ग्रंथ — सूची "

हिन्दी ग्रन्थ :

१. अक्षयरस — सं.डॉ.कुंवर चन्द्रप्रकाशसिंह,
म.स.विश्व विद्यालय, बड़ौदा ।

२. उत्तरी भारत की संत परम्परा — आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,
प्र.भारती भंडार, प्रयाग ।

३. कबीर — आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,
प्र.हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई ।

४. कबीर—एक विवेचन — डॉ. सरनामसिंह शर्मा,
प्र.हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली-६ ।

५. कबीर की विचार धारा— डॉ.गोविन्द त्रिगुणायत,
प्र.साहित्य निकेतन, कानपुर ।

६. कबीर साहित्य की परख—आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,
भारती भंडार, प्रयाग ।

७. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका—: त्रैमासिक :: संवत् २००८,वर्ष ५६:,
काशी नागरी प्रचारिणी सभा,द्वारा सं.।

८. काव्य शास्त्र — डॉ. भगीरथ मिश्र,
लखनऊ युनिवर्सिटी, लखनऊ ।

९. गुजरात की हिन्दी सेवा—डॉ.अम्बाशंकर नागर,
:राजस्थान युनिवर्सिटी द्वारा स्वीकृत शोध ग्रन्थ :

१०. गुजराती और ब्रजभाषा — कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—
डॉ.जगदीश गुप्त,
प्र.हिन्दी परिषद वि.वि., प्रयाग ।

११. गुजराती साहित्य का— श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे,
इतिहास— प्र.हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश ।

१२. गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रन्थ डॉ.अम्बाशंकर नागर,
प्र.गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ ।

१३. गोरख बानी डॉ.पीताम्बर दत्त बडथ्वाल,
प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

१४. गोरखनाथ और उनका युग-डॉ.रांगेय राघव,
प्र.आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

१५. दादूदयाल की बानी सं. पंडित सुधाकर द्विवेदी,
प्र.काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

१६. दादूदयाल की बानी : भाग १,२ : प्र.वेल्वेडियर प्रेस, प्रयाग ।

१७. निर्गुण हिन्दी काव्यधारा-डॉ.श्यामसुन्दर शुक्ल,
:बनारस हि.यु.द्वारा स्वीकृत शोध ग्रन्थ :

१८. निर्गुण साहित्य : सांस्कृतिक पृष्ठभूमि डॉ.मोती सिंह,
प्र.काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

१९. परमार्थ सोपान डॉ.रानडे,
प्र.भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

२०. पाटल :संत विशेषांक : सन् १९५५, वर्ष ३, अंक ६ ।

२१. भक्त चरितांक : कल्याण विशेषांक : प्र. गीताप्रेस, गोरखपुर ।

२२. भारत वर्ष का इतिहास, भाग २ डॉ.ईश्वरी प्रसाद,
प्र.इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, सन् १९५१ ।

२३. भारत के सन्त महात्मा श्री. रामलाल,
प्र.वोरा एण्ड कं., बम्बई ।

२४ भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी -डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्या,
प्र.राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२५. भारतीय-दर्शन डॉ.बलदेवप्रसाद उपाध्याय ।

२६. मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ — डॉ. सावित्री सिन्हा, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।

२७. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति — म.म. गौरिशंकर हीराचंद ओझा, हि.ए. इलाहाबाद, १९५४ ।

२८. मिश्रबन्धु विनोद: भाग २: मिश्रबन्धु, प्र. गंगापुस्तकमाला, लखनऊ, सं. १९५५ ।

२९. मीराँबाई की शब्दावली — वेल्वेडियर प्रेस, प्रयाग ।

३०. मीराँबाई की भक्ति और उनकी काव्यसाधना का अनुशीलन । डॉ. भगवानदास तिवारी, : सागर विश्व विद्यालय द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ :

३१. राजस्थानी भाषा और साहित्य । — डॉ. मोतीलाल मेनारिया, प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

३२. राजस्थानी भाषा और साहित्य । — डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, प्र. आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता — ७ ।

३३. रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव । डॉ. बदरीनारायण श्रीवास्तव, प्र. हिन्दी परिषद, प्रयाग ।

३४. संत दादू और उनकी वाणी — सं. 'अज्ञात', प्र. राजेन्द्रकुमार, बलिया, ।

३५. सन्त दर्शन — डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर ।

३६. सन्त काव्य — आ. परशुराम चतुर्वेदी, प्र. किताब महल, इलाहाबाद ।

३७. सन्त वाणी अंक : कल्याण : — प्र. गीताप्रेस, गोरखपुर ।

३८. सन्त वाणी : मासिक पत्रिका : प्र. ब्रिजकिशोरपथ, पटना ।

३९. सन्त साहित्य विशेषांक : साहित्य संदेश : — प्र. महेन्द्र, १९५८ ।

४०. सन्तबानी संग्रह १,२, प्र.वेल्वेडियर प्रेस, प्रयाग ।

४१. सन्त साहित्य डॉ.सुदर्शनसिंह मजीठिया,
प्र.रूपकमल प्रकाशन, दिल्ली-६ ।

४२. सद्गुरु कबीर साहेब - टीकाकार विचारदास साहेब,
का साखी ग्रन्थ । प्र. कबीर धर्म वर्धक कार्यालय, बड़ौदा ।

४३. सूफीमत साधना और साहित्य श्री.रामपूजन तिवारी,
प्र.ज्ञानमंडल, बनारस, संवत् २०१३ ।

४४. हिन्दी काव्य में - डॉ.पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ।
निर्गुण सम्प्रदाय ।

४५. हिन्दी साहित्य को - आचार्य विनय मोहन शर्मा,
मराठी सन्तों की देन । प्र.बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।

४६. हिन्दी साहित्य का - डॉ.रामकुमार वर्मा,
आलोचनात्मक इतिहास । प्र.रामनारायणलाल, प्रयाग ।

४७. हिन्दी साहित्य का - सं.राजबली पांडेय,
बृहत् इतिहास । प्र.काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

४८. हिन्दी साहित्य का - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,
इतिहास खण्ड । प्र.काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

४९. हिन्दी साहित्य का - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,
आदिकाल । प्र. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ।

५०. हिन्दी साहित्य की - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,
भूमिका । प्र.हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

५१. हिन्दी के विकास में - डॉ.नामवरसिंह,
अपभ्रंश का योग । प्र.लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-१ ।

२. हिन्दी की निर्गुण - डा. गोविन्द त्रिगुणायत ।
काव्यधारा और उसकी-
दार्शनिक पृष्ठभूमि ।

गुजराती ग्रन्थ :

१.	अखो: एक अध्ययन	श्री.उमाशंकर जोशी, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद।
२.	अखाकृत काव्यो-भाग १	दि.ब. नर्मदाशंकर दे.मेहता, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद।
३.	अप्रसिद्ध अक्षयवाणी	सं.श्री.जगन्नाथ दामोदर त्रिपाठी, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद।
४.	अखानी वाणी अने मनहर पद।	सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद।
५.	अखाना समकालीन समाजनुं रेखादर्शन।	श्री. कान्तीलाल व्यास, गु.स.मं. अप्रैल, १९४२।
६.	अध्यात्म भजनमाला : भाग १,२ :	सं.कहानजी धर्मसिंह, सन् १९०३।
७.	अनवर काव्य	सं.महासुखभाई चुनीलाल।
८.	आपणा कविओ	श्री.के.का.शास्त्री, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद।
९.	कच्छना सन्तो अने कविओ।	श्री.दुलेराय काराणी, सं. २०१५।
१०.	कविचरित : भाग १,२ :	श्री. के.का.शास्त्री, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद।
११.	कबीर अने कबीर-सम्प्रदाय।	श्री. किशनसिंह चावड़ा, फार्बस गुजराती सभा, बम्बई।
१२.	गुजराती साहित्य ना मार्ग सूचक स्तम्भो अने वधू मार्ग सूचक स्तम्भो।	श्री. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद।
१३.	गुजराती साहित्य परिषद रिपोर्ट।	भाग १ से ७।

१४. गुजराती साहित्यनु रेखा- दर्शन । : खंड १ : — श्री.र.मो.जोटे, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद ।

१५. गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास । :खंड १: — श्री.र.मो.जोटे, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद ।

१६. गुजराती भाषा अने साहित्य । — श्री.न.मो.दिवेटिया, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद ।

१७. गुजरात एक परिचय :सन् १९६१ : — सं.रामलाल परीख, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद ।

१८. गुजरात सर्व संग्रह : सन् १८८८ ई० : — श्री. नर्मद शंकरलाल ।

१९. गुजराती साहित्यना स्वरूपो ।:भाग १: — डॉ.मंजुलाल मजमुदार, आचार्य बुक डीपो, बड़ौदा ।

२०. गुजराती और हिन्दी साहित्य मां आपेलो फालो । — श्री. डाह्याभाई देरासरी ।

२१. गुर्जर साक्षर जयंतिओ — सं.जीवणलाल अमरशी मेहता, ज्ञान पुस्तक माला, अहमदाबाद ।

२२. गुजरातनो इतिहास — श्री. अब्दुल ज़फर नदवी, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद ।

२३. गुजरातनो इतिहास : भाग १,२ : — श्री.गोविन्दभाई हाथीभाई देसाई, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद ।

२४. गुजरातना भक्तो — श्री.माणेकलाल शंकरलाल राणा, सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।

२५. गुजराती हाथप्रतोनी संकलित यादी । : सन् १९३९ ई० : — श्री. के.का.शास्त्री, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, अहमदाबाद ।

२६. गवरी कीर्तन माला — शोधक 'मस्त', प्र.कमलाशंकर गोपालशंकर मचेच, अहमदाबाद ।

२७.	ग्रन्थ अने ग्रन्थकार : भाग ६ :	प्र.गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी,अहमदाबाद ।
२८.	चरोतर सर्व संग्रह : खेड़ा जिला :	सं.लोकमत प्रकाशन, नडियाद ।
२६.	छोटमनी वाणी : भाग १ से ३ :	सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।
३०	छोटमनी वाणी : भाग १ से ४ :	सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।
३१.	छोटमकृत काव्य संग्रह : भाग १ :	सं.बंसीलाल मणिलाल मेहता, भक्त जीवाजी किशोरदास स्मारक ट्रस्टी मंडल, अहमदाबाद ।
३२.	दिवाने सागर : भाग १,२ :	श्री. जगन्नाथ दामोदर त्रिपाठी, प्र.जीवनलाल अमरसी मेहता, अहमदाबाद ।
३३.	नवीन काव्य दोहन	प्र.तथा सं. श्री.विनयचंद गुलाबचंद शाह ।
३४.	नमूवाणी	सं.नरभेराम प्राणशंकर भट्ट, गुजराती [illegible] प्रिंटिंग,प्रेस, बम्बई ।
३५.	निजानंद चरितामृत	श्री.कृष्णादत्त सूरि प्रणीत, : अनु.मंगलजी उद्धवजी :,निजानंद प्रेस,जामनगर,।
३६.	निरांत काव्य	सं.गोपालराम शर्मा, निरांत मंदिर, बड़ौदा ।
३७.	नृसिंह वाणी विलास : भाग १ से ३ :	श्री.नृसिंहाचार्य, श्रेय साधक अधिकारी वर्ग, अहमदाबाद ।
३८.	परिचित पद संग्रह	सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।
३६.	पद संग्रह : संतराम महाराज :	श्री.फुलाभाई शामलभाई,संतराम मंदिर, नडियाद ।
४०.	प्राचीन काव्य सुधा : भाग १ से ५ :	सं.छगनलाल विद्याराम रावल, प्र.हंसराज पुरुषोत्तम मावजी ।

४१. प्राचीन काव्य माला : केवलपुरीकृत कविता :
: भाग २ :

४२. प्राचीन काव्य माला : भोजाकृत कविता :
: भाग ५ :

४३. प्रब ,प्राचीन काव्य माला : राधाबाईकृत कविता :
: भाग ६ :

४४. प्राचीन काव्य माला : बापु साहबकृत कविता :
: भाग ७ :

४५. प्राचीन काव्य माला : निरांतकृत कविता :
: भाग १० :

४६. प्राचीन काव्य माला : धीराकृत कविता :
: भाग २३ से २५ :

४७. प्राचीन काव्य : त्रैमासिक फाइलें :

४८. प्राचीन काव्य विनोद प्र.फार्बस गुजराती ग्रन्थमाला, बम्बई ।
: भाग १: संवत् १९८७ ।

४९. प्राचीन गुजराती छन्दो श्री.रामनारायण विश्वनाथ पाठक,
गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद ।

५०. प्रीतमदासना पदो सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।

५१. प्रीतमदासनी वाणी सस्तु साहित्य बर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।

५२. महोत्सव ग्रन्थ प्र.फार्बस गुजराती सभा, बम्बई ।

५३. बुद्धि प्रकाश :मासिक : अंक ८ अगस्त १९०१ ।

५४. बृ बृहत् पिंगल श्री.रामनारायण विश्वनाथ पाठक,
गुजरात साहित्य परिषद, बम्बई । सन् १९५५ ई०।

५५. बृहद काव्य दोहन सं.इच्छाराम सूर्यराम देसाई,
: भाग १ से ८ : `गुजराती` प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई ।

५६. भजन सागर प्र.सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।
: भाग १,२ :

५७. भजनिक काव्य संग्रह सं.वृन्दावनलाल कानजी ।

५८.	भारतीय संस्कारो अने तेनु गुजरात मां अवतरण ।	श्री. दुर्गाशंकर के. शास्त्री ।
५९.	भारतीय भाषाओ नी समीक्षा :ग्र.६, भा.२ :	ज्योर्ज ग्रियर्सन :अनु. श्री. के. का. शास्त्री : फार्बस गुजराती सभा, बम्बई ।
६०.	मध्यकालीन गुजराती साहित्य	आचार्य अनंतराय रावल, मेक्मिलन कंपनी, बम्बई ।
६१.	मध्यकालना साहित्य प्रकारो।	डॉ. चन्द्रकान्त मेहता, एन.एम. त्रिपाठी, प्रा. लि, बम्बई ।
६२.	[illegible] मीरांबाई एक मनन	डॉ. मंजुलाल मजमुदार, म.स.वि.वि., बड़ौदा ।
६३.	रविभाण अने मोरारनी वाणी ।	सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद ।
६४.	रविभाण सम्प्रदायनी वाणी ।	सं. ल. म. मोदी, बम्बई ।
६५.	साहित्य प्रवेशिका	श्री. हिंमतलाल ग. अंजारिया, एन.एम. त्रिपाठी, प्रा. लि., बम्बई ।
६६.	सोरठी सन्तो	श्री. फवेरचंद मेघाणी ।
६७.	सौराष्ट्र सर्व संग्रह	श्री. नर्मदाशंकर, सन् १८८८ ई० ।
६८.	सिद्धहेम	आचार्य हेमचन्द्राचार्य ।
६९.	सन्तोनी वाणी	सं. भगवानजी महाराज, सन् १९२० ई० ।
७०.	श्री. अखाजीनी साखिओ	सं. के. ए. ठाकर ।
७१.	शाक्त सम्प्रदाय	दी. ब. नर्मदाशंकर दे. मेहता, फार्बस गुजराती सभा, बम्बई ।

अंग्रेजी ग्रन्थ :

1. A Critical Edition of Narahari's
   Jnan Gita - By Suresh H.Joshi.
2. A History of Gujarat Vol. II.
   By M.S.Commissariatt.
3. An Anthology of Critical Statements.
4. Classical Poets of Gujarat -
   & Their influence on Society & Morals,
   By G. M. Tripathi.
5. Encyclopedia of Religion & Ethics,
   By James Hastings.
6. Formation of Maha Gujarat,
   Maha Gujarat Parishad,
   V. V. Nagar, 1954.
7. Gujarat & Its Literature,
   By Dr. K. M. Munshi.
8. Gazetteer of India,
   (Gujarat State; Surat Dist.)
   Revised Edition.
9. Gorakhnath & Kanphata Yogi,
   By Brigs.
10. Gujarati Phonology,
    By Prof. R. L. Turner.

11. Kevaladwaita in Gujarati Poetry,

By Dr. Yogindra Tripathi.

12. Medieval Misticism of India,

By K. Sen.

13. Main Tendencies in Medieval Gujarati Literature,

By Dr. M. R. Majumdar.

14. Old Gujarati & Old Western Rajasthani,

By Dr. L. P. Tessitory.

15. Philosophy of Akhaji,

By K. M. Thakar.

16. The Glory that was Gurjardesh,

(Vol. I, II, III)

By Dr. K.M.Munshi.

17. The Indian Philosophy,

(Vol. I)

By S. Dasgupta.